Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 1, Jan-Feb – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 14/01/2020 Accepted on : 25/01/2020 Publication Date: 28/02/2020

उत्तर-द्विवेदी युगीन यात्रा साहित्य और स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँ

SILPA SIVAN
Research scholar, department of Hindi
Cochin University of science and technology, Cochin-22
Email - silpasivan30@gmail.com

पाश्चात्य साहित्य में 18 वीं सदी के अंत में उभरी एक विशिष्ठ काव्य प्रवृत्ति है रोमांटिसिज़म जो मुख्य रूप से कविता के क्षेत्र में प्रतिफलित हुई, किन्तु जिसने साहित्य की अन्य विधाओं एवं कला के क्षेत्र में भी गहरा प्रभाव छोड़ा है। इसी काव्य प्रवृत्ति के लिए हिंदी साहित्य में प्रचलित शब्द है स्वच्छन्दतावाद एवं । इस शब्द और इसके अर्थ को लेकर विद्वानों में मतभेद है। स्वच्छन्दतावाद एक कलात्मक आन्दोलन है, परंपरा एवं रुढियों के प्रति विद्रोह जीवन के प्रति एक विशेष रुझान है। विद्वान नामवर सिंह के शब्दों में "स्वच्छन्दतावाद प्राचीन रुढियों से मुक्ति की आकांक्षा है।"[1] हिंदी स्वच्छन्दतावाद आधुनिक युग की देन है और उसमें देश की राजनैतिक, सामाजिक परिस्थितियों का बहुत बड़ा हाथ है।

किसी भी काव्य प्रवृत्ति का संचरण एक विधा विशेष तक सीमित नहीं रहता। यदि वह सचमुच युग प्रवृत्ति है तो उसका प्रभाव उस युग के अन्य लेखन चिंतन में होना है। अतः उत्तर द्विवेदी युगीन यात्रा साहित्य में स्वच्छन्दतावाद का कितना प्रभाव रहा है, इस पर दृष्टि डालना अनिवार्य है।

हिंदी साहित्य की गद्य विधाओं में यात्रा साहित्य विशेष उल्लेखनीय है। यद्यपि यात्रा साहित्य का उद्भव एवं विकास क्रमशः भारतेंदु एवं द्विवेदी युग में हुआ है , तथापि साहित्य की एक विधा विशेष के रूप में इस साहित्य रूप की प्रतिष्ठा और लोकप्रियता उत्तर द्विवेदी युग का देन है। डॉ. सुरेन्द्र माथुर ने इस युग को यात्रा साहित्य का स्वर्ण युग कहा है।'[2] इस काल में यात्रा साहित्य की श्रीवृद्धि के लिए हिन्दी की सरस्वती, चित्रमय जगत, विश्वामित्र, माधुरी, विशालाभारत, वीणा, सुधा, चाँद आदि सभी प्रमुख पत्रिकाओं का योगदान है।

यात्रा की दृष्टि से उत्तर द्विवेदी युग को वायुयान युग कहा जा सकता है। क्योंकि इस युग में यात्रायें विशेषकर वायुयानों द्वारा हुई हैं। विज्ञान ने दूरियां कम कर दीं। विश्व बहुत पास-पास आ गया था। एक देश की धडकनें और सिसकियाँ तक दूसरे देश से सुनी जा सकती थी। पुरानी दुनिया की सीमित चहार दीवारी के भीतर लोगों का दम घुट रहा था। उस समय के यात्रा साहित्य ने नए-नए देशों को परिचय की सीमा में ला दिया और प्रकृति की विराटता को दर्शाया।

उत्तर द्विवेदी युगीन यात्रा साहित्य ने नए-नए देशों को लोगों के सामने उद्घाटित किया। जर्मनी, लन्दन, रूस, पेरिस, अफ्रीका, जापान, तिब्बत, इराक जैसे विदेश एवं उत्तराखंड, दक्षिण भारत, कैलाश, लद्दाख, कश्मीर, दर्जेलिंग आदि स्वदेशों की कला एवं प्रकृति से यात्रा साहित्यकारों ने पाठकों का परिचय करवाया है।

इस समय के प्रसिद्ध यात्रा साहित्य है केदारनाथ राय का 'हमारी विलायत यात्रा' , बेणी शुक्ल का 'लद्दाख पेरिस की सैर' , पं. जवाहर लाल नेहरु का 'रूस की सैर' , महता जेमिनी के स्याम देश यात्रा' , स्वामी मंगलानंद पुरि के 'अफ्रीका यात्रा' , पं.कन्हैयालाल मिश्र के 'हमारी जापान यात्रा' , कृपानाथ मिश्र का 'विदेश

की बात' , हरिकृष्ण झझाडिया का 'मेरी दक्षिण भारत यात्रा' , धर्मचन्द्र सरावगी का 'यूरोप में सात मास' , प्रो.मनोरंजन का 'उत्तराखंड के पथ पर' इत्यादि ।

यात्रा साहित्य को विशिष्ट दशा एवं दिशा प्रदान करनेवाला साहित्यकार राहुल सांकृत्यायन इसी युग में रचनाशील रहा है । कथा साहित्य के क्षेत्र में जो स्थान प्रेमचंद को है वही स्थान यात्रा साहित्य के इतिहास में राहुल सांकृत्यायन को दिया जाता है । उत्तर द्विवेदी युग में राहुल सांकृत्यायन के 'मेरी लद्दाख यात्रा' , 'श्रीलंका' , 'तिब्बत में सवा वर्ष' और 'मेरी यूरोप यात्रा, प्रकाशित हुए ।

राहुल सांकृत्यायन के साथ साथ परिगण्य इस युग के यात्रा साहित्यकार है स्वामी सत्यदेव परिव्राजक । स्वामी जी का यात्रा साहित्य हिंदी भाषा प्रेम का सशक्त उदाहरण है । उनका 'यात्री मित्र' एवं 'मेरी जर्मन यात्रा' घुमक्कड़ों केलिए पथ प्रदर्शक का कार्य किया है । स्वामी जी के यात्रा साहित्य में प्रकृति प्रेम, राष्ट्रीय भावना, स्वदेश प्रेम आदि की अदम्य वांछा देखी जा सकती है । मेरी जर्मन यात्रा में उन्होंने लिखा है कि , "यदि हम स्वतन्त्र हो,तो संसार में सबसे अधिक धाक हमारी हो । जिनका अतीत गौरवपूर्ण है , जिनका साहित्य सुरभि स्रोत है और जिनकी वसुन्धरा ऐसी रत्न गर्भा है और फिर जो एशिया और यूरोप का मुख्य द्वार है । ओ हो । कितना प्रचंड प्रभाव हमारा दुनिया पर पड सकता है ।"[3] स्वतन्त्र भारत जितना गरिमामय होगा इसका चित्रण लेखक ने इन पंक्तियों में व्यक्त किया है ।

विषय वास्तु के स्तर पर स्वच्छन्दतावादी रचनाकारों ने उदात्त चरित्रों की गाथा के स्थान पर साधारण मानव के सामान्य अनुभवों तथा अपने परिवेश तथा प्रकृति के सहज रूपों को अंकित किया है । उत्तर द्विवेदी युगीन यात्रा साहित्य ने जनसाधारण के जीवन में कृत्रिमता के विरुद्ध स्वाभाविकता और सहजता की प्रतिष्ठा की है ।

स्वच्छन्दतावादी साहित्यकारों में प्रकृति के प्रति आकर्षण कई रूपों में हुआ है । जिस प्रकार स्वच्छन्दतावादी रचनाओं का मुख्य आलंबन प्रकृति रहा है, यात्रा साहित्य में भी प्रकृति की एहम भूमिका है । राहुल सांकृत्यायन प्रकृति पर मुग्ध रचनाकार है । उनके यात्रा साहित्य में प्रकृति के अप्रतिम चित्र विशेषकर पर्वतीय प्रकृति, ऋतुओं, वनस्पतियों, जलस्रोतों का चित्रण उपलब्ध है । लद्दाख यात्रा के हिमानी सौन्दर्य का चित्रण उन्होंने इस प्रकार किया है, " चारों तरफ घेरे हुए पहाड़ जिनके पीछे की ओर हिमाच्छादित शिखरवाले पर्वत है – बीच में जगह जगह लम्बे लम्बे जलाशय, सर्प की भांति कुटिल गति की जेहलम, दूर तक सफेदे की दोहरी पंक्तियों के बीच जानेवाली सड़कें, मीलों तक शहर के बाहर भी सेब, बादाम आदि के बागों में बने हुए छोटे-छोटे सुंदर बंगले, हरी घासों से ढके लम्बे लम्बे क्रीडा क्षेत्र, सुन्दर चिनार वृक्षों की मधुर शीतल छाया के अन्दर हरी घास के मखमली फर्शोंवाली सुभूमियाँ देखने में बड़ी सुन्दर मालूम होती है ।"[4]

प्रकृति चित्रण करने में स्वामी सत्यदेव परिव्राजक भी पीछे नहीं है। 'राईन' नदी का हृदयंगम चित्रण उन्होंने इस प्रकार प्रस्तुत किया है, " पहाड़ी चट्टानों की तंग घाटी में प्रवेश कर राईन नदी एक लज्जावती रमणी की तरह बड़े संकोच से आगे बढती है ।.... यहाँ प्राचीन गढ़ियों के खंडहर, विचित्र पर्वतश्रृंग, खिलखिलाती अंगूरों की बेलें और अद्भुत कन्दराएँ इतनी है कि जिनके कारण राईन नदी प्रकृति के पुजारियों और नैसर्गिक सौन्दर्य के उपासकों की अत्यंत प्यारी हो गयी है ।"[5]

अतः बनावटी सौन्दर्य का तिरस्कार और प्रकृति के सहज रूपों का आँखों देखा वर्णन इन यात्रावृत्तों की विशिष्टता है । इन रचनाकारों का प्रकृति-पर्यवेक्षण कल्पना के विचरण नहीं अपितु अनुभव संयुक्त विवरण है ।

स्वच्छन्दतावादी साहित्यकारों ने यह अनुभव किया कि देश में जागृति लाने केलिए अतीत को उलटना आवश्यक है। स्वच्छन्दतावाद में इतिहास को देखने की यथार्थपरक नहीं बल्कि रोमानी दृष्टि रही है। अतः इन रचनाओं में इतिहास को रोमांस में बदलने का प्रयास है। इसके विपरीत यात्रा साहित्य में इतिहास का यथार्थ चित्रण हुआ है। वास्तव में उस समय के यात्रा साहित्यकारों ने इतिहास,धर्म,दर्शन को नए ढंग से देखा है। जहाँ जयशंकर प्रसाद ने शैव दर्शन को अपनी रचनाओं में महत्त्व दिया, वहाँ राहुल सांकृत्यायन ने बौद्ध दर्शन में नवीनता की तरंगें भरने की कोशिश की है।

व्यक्तिवाद स्वच्छन्दतावाद की चेतना है। इसमें लेखक अपनी भावना, अपनी दृष्टि और अपनी रुचि को ही सबकुछ मानता है। मानव जीवन में उसका व्यक्तित्व और अहं ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। व्यक्ति स्वातन्त्र्य या वैयक्तिकता को स्वच्छन्दतावाद में महत्वपूर्ण स्थान है। अर्थात स्व इच्छा ही उसमें प्रमुख है। इस प्रकार देखें तो यात्रायें एक व्यक्ति की स्वतंत्रता का प्रतीक है। स्वेच्छा से अपनी मन पसंद जगहों की, की गयी यात्राओं का विवरण लिखने से वास्तव में यात्रा साहित्यकार अपनी स्वतंत्रता को ही लिपिबद्ध कर रहा है। यात्रा साहित्य में यात्री की रूचि एवं अनुभूति ही उभरकर आता है। यात्रा साहित्य में जो मैं शैली का प्रयोग होता है, वह केवल शैली नहीं व्यक्तित्व के आग्रह का प्रतिफलन है। वैयक्तिकता के साथ-साथ आत्म-प्रसार की आकांक्षा भी यात्राओं द्वारा सफल हो जाता है। यात्रा से व्यक्ति के व्यक्तित्व में निखार आ जाता है। अतः प्रत्येक यात्रा साहित्य रचनाकार की आत्मोपलब्धि का दस्तावेज है। अतः उत्तर द्विवेदी युगीन प्रत्येक यात्रा साहित्य व्यक्ति स्वातंत्र्य का सशक्त उदहारण है।

स्वच्छन्दतावाद कविता की कसौटी रही है और उसके कवियां जैसे श्रीधर पाठक, रामनरेश त्रिपाठी, प्रसाद, पन्त जैसे कविवरों ने अभूतपूर्व कार्य किया है। स्वच्छन्दतावाद का प्रभाव जितना उस काल की कविताओं में हुआ है उतना प्रभाव गद्य विधाओं में नहीं दिखता खास करके यात्रा साहित्य में। प्रस्तुत काल में कल्पना से बिलकुल अलग होकर विभिन्न देशों के सांस्कृतिक, धार्मिक, राष्ट्रीय चेतनाओं का पाठकों से परिचय करवाने में उस समय के यात्रा साहित्यकारों ने कठिन कोशिश की है। इसके द्वारा भारत की गरिमा को ऊँचा दिखने का भी प्रयास उनके द्वारा हुआ है। स्थानीय प्रकृति से ऊपर उठकर विश्व फलक के प्रकृति को उस समय के यात्रा साहित्य में स्थान मिला है। प्रकृति सदैव यात्रा साहित्य का अंग रहा है, और वो भी काल्पनिक प्रकृति नहीं वरन् आँखों देखा प्रकृति की विराटता है। कवियों का वह काल्पनिक युग जन जीवन से दूर रहा है, उस समय जनता के बीच चलकर युग यथार्थ को यात्रा साहित्यकारों ने प्रस्तुत किया है। अतः उत्तर द्विवेदी युगीन यात्रा साहित्य स्वच्छन्दतावाद से अलग होकर अपने आप में एक विशिष्ट एवं अलग पहचान रखनेवाला है।

सन्दर्भ सूची :

1. नामवर सिंह , छायावाद , पृ.सं : 16.
2. डॉ.सुरेन्द्र माथुर ,यात्रा साहित्य:उद्भव और विकास ,पृ.सं : 96.
3. स्वामी सत्यदेव परिव्राजक , मेरी जेर्मन यात्रा ,पृ.सं : 108.
4. राहुल संकृत्यायन , मेरी लद्दाख यात्रा , पृ.सं : 53.
5. स्वामी सत्यदेव परिव्राजक , मेरी जर्मन यात्रा , पृ.सं : 55.

Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences **ISSN: 2581-6241** **Volume - 3, Issue - 1, Jan-Feb – 2020**
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal **Impact Factor: 3.589**
Received on : 14/01/2020 **Accepted on : 25/01/2020** **Publication Date: 28/02/2020**